मर्म प्रकरण

* मर्म ⇒ "मारयन्तीति मर्माणि।" (डल्हण)
जिन स्थानों पर आघात लगने से मृत्यु होती है उनको मर्म कहते हैं।

अर्थात् मर्म, वे महत्वपूर्ण स्थान होते हैं जहाँ प्राण विशेष रूप से रहते हैं तथा ये माँस, सिरा, स्नायु, अस्थि और सन्धि के मिलने से बनते हैं एवं इन पर आघात प्रायः मृत्युकारक होता है परन्तु यदि मर्माघात का रोगी बच भी जाये तो मर्म स्थान में स्थायी विकलता आ जाती है या कृच्छ्रसाध्य रोग उत्पन्न होते हैं।

* "अपि च मरणकरित्वान्मर्म।" (अ० हृ० शा०)

* "मर्माणि जीवद्धारणि प्रायेण मुनयो जगुः। (शार्ङ्गधर)

* मर्म का वर्णन आचार्य सुश्रुत ने शारीरस्थान के षष्ठोध्याय 'प्रत्येकमर्मनिर्देशशारीरं' में किया है।

* आचार्य चरक ने मुख्यतः 'त्रिमर्म' का वर्णन किया है- हृदय, वस्ति, शिर।

* आचार्य चरक ने मर्म के दो प्रकार माने हैं-
(1) स्कन्धाश्रित ⇒ हृदय, वस्ति, शिर
(2) शाखाश्रित

* मर्म का लक्षण ⇒ "मर्माणि नाम मांससिरास्नायवस्थिसंधिसन्निपाताः (सु०शा० 6/16)
मांस, सिरा, स्नायु, अस्थि, सन्धि इन पाँचो का एकत्रित होना ही मर्म का लक्षण है।
वाग्भट ने धमनी सहित ⑥ के सन्निपात को मर्म का लक्षण कहा है।

Scanned with CamScanner

* मर्म में - सोम (जल), अग्नि, वायु, सत, रज, तम और भूतात्मा (आत्मा) निवास करते हैं। इनको ही जीवनाधार कहते हैं।

* मर्म संख्या ⇒ (107)

* मर्म वर्गीकरण ⇒

(i) संरचना भेद से ⇒ 107

	सुश्रुतानुसार	वाग्भट्ट अनुसार
(A)	मांस मर्म - 11	मांस मर्म - 10
(B)	सिरा मर्म - 41	सिरा मर्म - 37
(C)	स्नायु मर्म - 27	स्नायु मर्म - 23
(D)	अस्थि मर्म - 8	अस्थि मर्म - 8
(E)	सन्धि मर्म - 20	सन्धि मर्म - 20
		धमनी मर्म - 9

* आचार्य वाग्भट्ट ने संरचना भेद से बताये गये सुश्रुतोक्त 5 प्रकार के मर्म के अतिरिक्त धमनीमर्म का भी इसमें समावेश किया है।

Scanned with CamScanner

(ii) शरीरगत अंग भेद से ⇒ 107

(A) शाखाश्रित मर्म - (44) - (Upper limb) - 11+11=22
- (Lower limb) - 11+11=22

(B) कोष्ठाश्रित मर्म - (26) - उदर एवं उरः प्रदेश मे - 12
पृष्ठ भाग में - 14

(C) ऊर्ध्वजत्रुगत मर्म - (37) - ग्रीवा के ऊपरी भाग में - 37

(iii) आघात परिणाम भेद से ⇒ 107

(A) सद्यः प्राणहर मर्म (आग्नेय) - (19)

(B) कालान्तर प्राणहर मर्म (सौम्याग्नेय) - (33)

(C) वैकल्यकर मर्म (सौम्य) - (44)

(D) विशल्यघ्न मर्म (वायव्य) - (3)

(E) रुजाकर मर्म (आग्नेय+वायव्य) - (8)

(A) सद्यः प्राणहर मर्म ⇒ 19

" शृंगाटकान्यधिपतिः शंखौ कण्ठसिरागुदम् ।
हृदयं बस्तिनाभी च घ्नन्ति सद्योहतानि तु ॥ (सु.शा. 6/9)

Scanned with CamScanner

(B) कालान्तर प्राणहर मर्म ⇒ 33

" वक्षोमर्माणि सीमन्ततलक्षिप्रेन्द्रबस्तयः।
कटिकतरुणे सन्धी पार्श्वजौ वृहती च या॥
नितम्बाविति चैतानि कालान्तरहराणि तु।" (सु॰शा॰ 6/10)

(C) वैकल्यकर मर्म ⇒ 44

" लोहिताक्षाणि जानूर्वीकूर्चविटपकूर्पराः।
कुकुन्दरे कक्षधरे विधुरे सकृकाटिके॥
अंसांसफलकायाङ्गा नीले मन्ये फणौ तथा।
वैकल्यकरणान्याहुरावर्त्तौ द्वौ तथैव च॥ (सु॰शा॰ 6/12-13)

(D) विशल्यघ्न मर्म ⇒ 3

" उत्क्षेपौ स्वयनी चैव विशल्यघ्नानि निर्दिशेत्।" (सु॰शा॰ 6/11)

(E) रुजाकर मर्म ⇒ 8

" गुल्फौ द्वौ मणिबन्धौ द्वौ द्वे द्वे कूर्चशिरांसि च।
रुजाकराणि जानीयादष्टावेतानि बुद्धिमान॥ (सु॰शा॰ 6/14)

Scanned with CamScanner

* परिमाण भेद से ⇒ परिमाण भेद से मर्म 5 प्रकार के बताये गये हैं।

(A) चार (4) अंगुल परिमाण ⇒ (29) - सुश्रुतानुसार
या
(हस्त तल परिमाण) ⇒ हृदय, नाभि, बस्ति, गुदा, कूर्च, श्रृंगाटक, सीमन्त, नीला, कण्ठसिरा एवं मन्या मर्म

* वाग्भट ने भी (29) ही माने हैं।

(B) तीन (3) अंगुल परिमाण ⇒ जानु व कूर्पर मर्म - (4)

* वाग्भट ने भी (4) ही माने हैं।

(C) दो (2) अंगुल परिमाण ⇒ गुल्फ व मणिबन्ध मर्म - (4)

* वाग्भट ने (6) माने हैं⇒ गुल्फ, मणिबन्ध, स्तनमूल

(D) एक (1) अंगुल परिमाण ⇒ (16) - उर्वी, कूर्चशिर, विटप, कक्षाधर, पार्श्वसन्धि व स्तनमूल

* वाग्भट्ट ने (12) माने हैं⇒ उर्वी, कूर्चशिर, कक्षाधर, विटप

(E) आधा (1/2) अंगुल परिमाण ⇒ (54) उपरोक्त के अतिरिक्त शेष मर्मों का परिमाण

* वाग्भट ने शेष (56) को माना है।

Scanned with CamScanner

मर्माघात के लक्षण ⇒ (अष्टांग हृदय शा० 4/47-51)

मर्माघात	लक्षण
(1). मांसमर्म पर आघात	निरन्तर रक्तप्रवृत्ति, इन्द्रियार्थग्रहणनाश मांसोदक सदृश्य तनु स्त्राव एवं पाण्डुता।
(2) अस्थिसर्म पर आघात	'सर्वासुअवस्थासु न शान्तेर्ऽस्ति।' रुक-रुक कर मज्जायुक्त स्वच्छ स्त्राव।
(3) स्नायुमर्म पर आघात	आयाम, आक्षेपक, स्तब्धता, वैकल्यता, सवारी करने, खड़े रहने व बैठने में अशक्ति
(4) सिरामर्म पर आघात	सान्द्र व अतिरक्तस्त्राव, भ्रम, श्वास, हिक्का, रक्तक्षय से प्यास, मोह एवं मृत्यु।
(5) सन्धिमर्म पर आघात	विद्धस्थान शूकपूर्ण, चेष्टा व बलनाश व्रण भर जाने पर कुणिता व खंजता, पर्वशैथ
(6) धमनी मर्म पर आघात	शब्द के साथ झागयुक्त अष्ठा रक्तस्त्राव एवं रोगी संज्ञारहित।

- सद्यः प्राणहर मर्म में मुख्य विकृति = इन्द्रियार्थग्रहणनाश
- कालान्तर प्राणहर मर्म में मुख्य विकृति = धातुक्षय
- पार्श्वसन्धि मर्म को तिर्यकमर्म भी कहते हैं।

Scanned with CamScanner

* क्षिप्र एवं तलहृदय नामक कालान्तर प्राणहर मर्म, सद्यः प्राणहर नहीं होने पर भी शीघ्र मारक होते हैं। यथा-

"क्षिप्राणि विद्धमात्राणि घ्नन्ति।" (सु० शा० 6/15)

"क्षिप्राणि कदाचिदाशु मारयन्ति।" (सु० शा० 6/24)

"क्षिप्रेषु तत्र सतलेषु हतेषु रक्तं ......।" (सु०शा०6/33)

* मर्मों का घातक काल ⇒ (सुश्रुत शारीर 6/24)

(1) सद्यः प्राणहर मर्म = सात (7) दिन के अन्दर मृत्यु।

(2) कालान्तर प्राणहर मर्म = 1 पक्ष या 1 मास में मृत्यु।

(3) विशल्यघ्न मर्म = जब तक शल्य विद्ध रहता है, तब तक व्यक्ति जीवित रहता है

(4) वैकल्यकर मर्म = शरीर में स्थायी विकलता का कारण बनते हैं। (DISABILITY

(5) रुजाकर मर्म = तीव्र वेदना उत्पन्न करते हैं।

* आज के परिपेक्ष्य में मर्मों को VITAL ORGANS की संज्ञा दी गयी है।

Scanned with CamScanner

✿ <u>समीपस्थ आघात से मर्मों का अन्तर्परिवर्तन</u> ⇒ (सु॰शा॰6/2…)

✿ सद्यः प्राणहर मर्म पर आघात ⇒ कालांतर प्राणहर में परिवर्तित

✿ कालांतर प्राणहर मर्म पर आघात ⇒ वैकल्यकर मर्म में परिवर्तित

✿ विशल्यघ्न मर्म पर आघात ⇒ वैकल्यकर मर्म में परिवर्तित

✿ वैकल्यकर मर्म पर आघात ⇒ रुजाकर मर्म में परिवर्तित

✿ रुजाकर मर्म पर आघात ⇒ अल्प पीड़ा दायक

Scanned with CamScanner